शिक्षक-कार्यशाला

सत्र 2008 से ही मार्च माह में शिक्षकों के लिए व्यक्तित्त्व विकास एवं अध्ययन–अध्यापन सम्बन्धी अनुभव आधारित समस्या, समाधान एवं सुझाव के लिए कार्यशाला का आयोजन प्रारम्भ हुआ। एक दिवसीय कार्यशाला अब सात दिवसीय कार्यशाला में बदल चुकी है।

2007–2008	02 मार्च	एक दिवसीय
2008–2009	04 मार्च	एक दिवसीय
2009–2010	05 मार्च	एक दिवसीय
2010–2011	01 मार्च	एक दिवसीय
2011–2012	4–5 मार्च	दो दिवसीय
2012–2013	4–10 मार्च	सप्त दिवसीय
2013–2014	2–8 मार्च	सप्त दिवसीय
2014–2015	8–14 मार्च	सप्त दिवसीय

यह कार्यशाला महाविद्यालय के शिक्षकों के लिए होती है। वही विषय रखते हैं, चर्चा करते हैं, निष्कर्ष पर पहुँचते हैं अथवा प्रयास करते हैं। दृष्टा एवं अन्तिम टिप्पड़ी के लिए वाहय विषय विशेषज्ञ की उपस्थिति रहती है। कार्यशाला का कार्यवृत्त, शोध–पत्र अथवा सुझाव प्रति वर्ष प्रकाशित होता है।

अभिविन्यास/पुनश्चर्या/संगोष्ठी/कार्यशाला में सहभाग

प्रत्येक शिक्षक को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित विभिन्न शिक्षणेत्तर गतिविधियों में सक्रिय सहभाग हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। महाविद्यालय के **सभी शिक्षक** सम्बन्धित पाठ्यक्रमों में सहभागी हो चुके हैं। महाविद्यालय में लगभग प्रतिवर्ष राष्ट्रीय संगोष्ठी, कार्यशाला का आयोजन होता है। जिसका कर्ता–धर्ता शिक्षक होता है।

विभागीय कार्यशालाएं विभागीय शिक्षकों के संयोजकत्व में ही सम्पन्न होती है।

अनुसंधान

शोध समिति

अध्यक्ष – डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य

सचिव – डॉ. विजय कुमार चौधरी, प्रभारी, भूगोल विभाग

सदस्य – डॉ. शिव कुमार बर्नवाल, प्रभारी, रसायन शास्त्र

– डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, प्रभारी, राजनीतिशास्त्र विभाग

– श्रीमती कविता मन्ध्यान, प्रभारी, अंग्रेजी विभाग

यह समिति महाविद्यालय में शोध संस्कृति के विकास एवं शोध प्रवृत्ति को बढ़ावा देने हेतु निरन्तर सक्रिय है। कुल सामाजिक मानविकी विषयों के नौ शिक्षकों को शोध कार्य हेतु अब तक प्रोत्साहित किया जा चुका है और वे इस दिशा में कार्य कर रहे हैं।

शोध पत्रिका का प्रकाशन

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका

विमर्श –ISSN 0976-0849 सम्पादक–डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य

मानविकी –ISSN 0976-0830 सम्पादक–डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य, डॉ. ओमजी उपाध्याय, प्राचीन इतिहास विभाग

महाविद्यालय के सहयोग से प्रकाशित शोध-पत्रिका

योगवाणी–RNI-NP/GR/125/14 मुख्य सम्पादक–महन्त योगी आदित्यनाथ, प्रबन्धक/सचिव, प्रबन्ध सम्पादक–डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य

शोध संचयन–ISSN 0975-1254 सहायक सम्पादक–डॉ. प्रदीप कुमार राव

भूतल दिग्दर्शन–ISSN 0976-0768 सम्पादक–डॉ.विजय कुमार चौधरी

इतिहास दर्पण–ISSN 0974-3065 सम्पादक–प्रो. टी.पी. वर्मा, प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव द्वारा उत्तर प्रदेश के शोध अध्येताओं से सम्पर्क एवं उनका सहयोग।

महाविद्यालयी शिक्षकों के लोकप्रिय व्याख्यान

महाविद्यालय में प्रतिवर्ष 6 व्याख्यान शिक्षकों के कराये जाते हैं–

1 अगस्त–लोकामान्य तिलक स्मृति व्याख्यान।

16 अगस्त–रामकृष्ण परमहंस स्मृति व्याख्यान।

7 सितम्बर–विपिन चन्द्र पाल स्मृति व्याख्यान।

6 दिसम्बर–बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर स्मृति व्याख्यान।

8 जनवरी–लाला लाजपत राय स्मृति व्याख्यान।

माघ पूर्णिमा सन्त रविदास स्मृति व्याख्यान।

राष्ट्रीय सेवा योजना/स्वैच्छिक श्रमदान में शिक्षकों की भागीदारी

सामाजिक-सांस्कृतिक-राष्ट्रीय भाव के विकास हेतु राष्ट्रीय सेवा योजना के मुख्य आयोजनों/कार्यक्रमों यथा **जन-जागरण** अभियान, **स्वच्छता** अभियान, विशेष शिविर तथा विभागों द्वारा **अभिगृहीत गाँव** के कार्य में सभी शिक्षकों की उपस्थिति अनिवार्य होती है।

भाषा की कक्षाएँ : शिक्षकों के लिए

महाविद्यालय द्वारा शिक्षकों के लिए समय–समय पर अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा की कक्षाएँ चलाई जाती हैं। अंग्रेजी की कक्षा के लिए श्री रोहिताश्व श्रीवास्तव जी एवं हिन्दी पढ़ाने के लिए प्रो. सदानन्द गुप्त जी, डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय जी अपनी निःशुल्क सेवा देते हैं।

शिक्षक आचार संहिता

शिक्षकों में आत्मानुशासन विकसित करने की दृष्टि से महाविद्यालय में शिक्षक आचार संहिता लागू है।

1. शिक्षक स्वयं विद्यार्थियों के लिए प्रतिमान बनें।
2. समय से पूर्व उपस्थित हों। प्रातः 09:15 पर सभी शिक्षकों की उपस्थिति अनिवार्य है। प्रार्थना की घंटी से पूर्व उपस्थिति पंजिका पर हस्ताक्षर न होने पर लाल रंग की रेखा खींच दी जायेगी, तत्पश्चात् आने का समय डाल दें, हस्ताक्षर न करें। जाते समय हस्ताक्षर करें तथा समय डालें। तीन दिन विलम्ब होने पर एक दिन आकस्मिक अवकाश मान लिया जायेगा।
3. महाविद्यालय परिसर में किसी भी शिक्षक की उपस्थिति के आसपास अनुशासन की जिम्मेवारी सम्बन्धित शिक्षकों की होगी।
4. नशा मुक्त परिसर का नियम स्वयं पर लागू करें।
5. पाठ्यक्रम योजना का शत–प्रतिशत पालन करें। 10 जुलाई तक द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की पाठ्यक्रम योजना तथा 20 जुलाई तक प्रथम वर्ष की पाठ्यक्रम योजना प्राचार्य के पास उपलब्ध करा दें।
6. प्रायोगिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम शत–प्रतिशत पूर्ण हो। प्रायोगिक कक्षाओं में सभी विद्यार्थियों के कक्षावार मोबाइल नम्बर रखें जायें।
7. कक्षा में व्याख्यान–सारांश की छायाप्रति सभी विद्यार्थियों को उपलब्ध कराकर ही पढ़ाएं।
8. प्रत्येक व्याख्यान से पूर्व पिछले सारांश/व्याख्यान पर प्रश्नोत्तर का समय दें।
9. कक्षा में मोबाइल लेकर किसी भी कीमत पर न जाएं।
10. प्रति प्रश्नपत्र गत वर्ष के अतिरिक्त कम से कम पांच व्याख्यान प्रोजेक्टर पर अवश्य पढ़ाएं।
11. पुस्तकालय की सभी पुस्तकें 2 मई से पूर्व प्रतिवर्ष जमा कर अदेयता प्रमाण पत्र अवश्य प्राप्त कर लें। पुस्तकालय की किसी पुस्तक के बकाया होने की दशा में ग्रीष्मावकाश स्वीकृत नहीं होगा।
12. महाविद्यालय के किसी प्रकार के आर्थिक आय–व्यय, अग्रिम आदि का समायोजन 20 मार्च तक अवश्य करा लें।
13. जो दायित्त्व सौंपा जाय उसे निर्धारित समय से शत–प्रतिशत पूर्ण करें।
14. पूर्व निर्धारित कार्यक्रम हेतु अवकाश एक दिन पूर्व स्वीकृत कराएं। अवकाश स्वीकृत कराए बिना अथवा बिना किसी सूचना के अनुपस्थित होने पर अवैतनिक अवकाश मान लिया जायेगा।
15. बचे हुए आकस्मिक अवकाश आगे के अवकाश में जुड़ते रहेंगे एवं जून तक 16+14त्र30 अवकश से अधिक बचे अवकाश का प्रतिदिन के वेतन की दर से नकद भुगतान अगस्त माह में कर दिया जायेगा।
16. राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी को अगस्त से मार्च माह तक एक हजार रू. प्रतिमाह मानदेय भुगतान किया जायेगा।
17. विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा में प्रश्नपत्र निर्माण, उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन आदि कार्य शिक्षक के स्वाभाविक दायित्व के अन्तर्गत आएगा, उसके लिए किसी प्रकार का अतिरिक्त भुगतान नहीं होगा।
18. विश्वविद्यालय परीक्षा मानकानुसार/नियमानुसार सम्पन्न कराना शिक्षक का उत्तरदायित्व है। अतः परीक्षा के समय शहर छोड़ते समय सूचना अवश्य दें।
19. महाविद्यालय के सभी आयोजनों, कार्यक्रमों, राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविरों के उद्घाटन, समापन समारोह आदि में शिक्षक की उपस्थिति अनिवार्य होगी। उचित कारण पर आकस्मिक अवकाश दिया सकता है।
20. महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के समस्त आयोजनों/कार्यक्रमों में प्रबन्ध तन्त्र के निर्देशानुसार उपस्थिति एवं सहयोग अनिवार्य होगी।
21. 15 अगस्त, 2 अक्टूबर, 26 जनवरी को सभी की उपस्थिति अनिवार्य होगी। अनुपस्थित रहने पर आकस्मिक अवकाश चढ़ेगा। किन्तु ध्वजारोहण में कहीं भी सम्मिलित होने का प्रमाण–पत्र देना होगा।
22. स्वैच्छिक श्रमदान में शिक्षक प्रतीकात्मक रूप से छात्रों का प्रतिमान बनें। विद्यार्थियों को गोद लेने की योजना को भी शिक्षक स्वेच्छानुसार लागू कर सकते हैं। गोद लिये विद्यार्थियों की सूचना अवश्य दे दें।
23. समय–समय पर जारी संशोधनों एवं नये निर्देशों का पालन अनिवार्य होगा।

शिक्षक-कार्यवृत्त

प्रतिमाह शिक्षक द्वारा ''शिक्षक–कार्यवृत्त'' भरा जाता है। कार्यवृत्त का प्रारूप शिक्षक को जवाबदेह बनाने, शिक्षणेत्तर गतिविधियों में उन्हें सक्रिय करने एवं उनमें सेवाभाव प्रेरित करने आदि की दृष्टि से बनाया गया है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़- गोरखपुर **सत्र : 2014–2015**

विषय / प्रश्नपत्र........................माह–.................. **शिक्षक कार्यवृत्त** प्राध्यापक..

विषय / माह / कक्षाएं		बी.ए. / बी.एस–सी. / बी.काम.						पी.जी.				प्राध्यापक की अपनी बात
		I प्रा.	I सै.	II प्रा.	II सै.	III प्रा.	III सै.	I प्रा.	I सै.	II प्रा.	II सै.	
पाठ्यक्रम योजना के अनुसार पढ़ाया (✔ करें) 'नही' के लिए X करें	पूर्णतः											
	अधिकांश											
	आंशिक / नहीं											
विद्यार्थी कक्षाध्यापन (सं.)												
मासिक मूल्यांकन (हाँ / नहीं)												
प्रगति आख्या देने की तिथि												
कुल पढ़ाये गये व्याख्यानों की संख्या												

कितने कार्य दिवस में विलम्ब से आए	
कितने कार्य दिवस में समय से पूर्व गये	
दायित्व का नाम (क्या किया गया)	
प्रोजेक्टर से पढ़ाये गये व्याख्यान	
स्वैच्छिक श्रमदान (हाँ / नहीं) कितने सप्ताह–कितना समय	
अन्य किसी कार्यक्रम में योगदान किस रूप में	
कोई आयोजन जिसमें प्राप्त उत्तरदायित्व पूर्ण नहीं किया गया।	
वे कार्य जो स्वप्रेरित किये गये हों।	
परीक्षा परिणाम–2014 (प्रतिशत में) (परीक्षा परिणाम घोषित होने पर)	प्रथम वर्ष..............................द्वितीय वर्ष ....तृतीय वर्ष..............................
कोई कार्य जो किसी दूसरे के जिम्मे था किन्तु आवश्यकता महसूस करते हुए आगे बढ़कर स्वयं किया गया हो	

नोट : आवश्यकतानुसार अलग से पृष्ठ का उपयोग किया जा सकता है। शिक्षक कार्यवृत्त को प्रगति आख्या के साथ ही जमा करें।

वर्तमान सत्र में नाम बदलकर **'शिक्षक स्वमूल्यांकन प्रपत्र'** कर दिया गया।

विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास प्रयास की एक झलक

महाविद्यालय की पूरी योजना विद्यार्थियों पर केन्द्रित है। निर्धारित पाठ्यक्रमों के गुणवत्तायुक्त अध्ययन–अध्यापन के साथ–साथ विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्त्व विकास हेतु अपनी पूरी क्षमतानुसार महाविद्यालय परिवार सक्रिय है।

शैक्षिक-तिथि पत्र

प्रतिवर्ष महाविद्यालय का शैक्षिक तिथि पत्र 15 जुलाई तक वेबसाइट पर घोषित हो जाता है। परीक्षा परिणाम की बिना प्रतीक्षा किये 16 जुलाई से द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की कक्षाएँ प्रारम्भ हो जाती हैं। 01 अगस्त से प्रथम वर्ष की पढ़ाई शुरू कर दिया जाता है। सभी प्रयोगशालाएँ 16 अगस्त से प्रारम्भ हो जाती है।

1.	1 जुलाई	–	बी.एड. प्रथम वर्ष की कक्षा प्रारम्भ
2.	4 जुलाई	–	स्वामी विवेकानन्द पुण्यतिथि पर पौधारोपण एवं व्याख्यान
3.	10 जुलाई	–	एन लिस्ट द्वारा अनुदानिक कार्यशाला
4.	15 जुलाई	–	द्वितीय एवं तृतीय वर्ष का प्रवेश पूर्ण
5.	15 जुलाई	–	प्रथम वर्ष की प्रवेश अर्हता सूची घोषित
6.	16 जुलाई	–	द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ
7.	23 जुलाई	–	चन्द्रशेखर आजाद/लोकमान्य तिलक जयन्ती पर व्याख्यान
8.	30 जुलाई तक	–	प्रथम वर्ष की प्रवेश प्रक्रिया
9	31 जुलाई	–	मुंशी प्रेमचन्द जयन्ती पर व्याख्यान एवं कर्मचारी संघ चुनाव
10.	01 अगस्त	–	प्रथम वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ एवं लोकमान्य तिलक स्मृति व्याख्यान (डॉ. शिवकुमार बर्नवाल)
11.	02 अगस्त	–	सभी विभागों का अधिकृत गांव में एक दिवसीय शिविर
12.	06 अगस्त	–	परमाणु बम बिस्फोट त्रासदी के अवसर पर रक्षा अध्ययन विभाग में व्याख्यान
13.	09 अगस्त	–	विज्ञान संकाय के सभी विषयों की विभागीय कार्यशालाएं (डॉ. डी.के. सिंह) प्राचीन इतिहास एवं मध्यकालीन इतिहास विभाग की विभागीय कार्यशाला
14.	13 अगस्त	–	देश विभाजन की पूर्व संध्या पर व्याख्यान
15.	14 अगस्त	–	वाणिज्य विभाग एवं अर्थशास्त्र विभाग की विभागीय कार्यशाला
16.	15 अगस्त	–	स्वतन्त्रता दिवस समारोह
17.	16 अगस्त	–	रामकृष्ण परमहंस स्मृति व्याख्यान : योग एवं अध्यात्म (डॉ. प्रदीप कुमार राव)

शैक्षिक-तिथि पत्र

18. 21 से 27 अगस्त – दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान माला
19. 04 सितम्बर – शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर कार्यक्रम
20. 05 सितम्बर – भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत विषय पर गणित विभाग द्वारा व्याख्यान
21. 07 सितम्बर – विपिन चन्द्र पाल स्मृति व्याख्यान : राजनीतिशास्त्र विभाग द्वारा
22. 11 सितम्बर – अंग्रेजी विभाग द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला
    मनोविज्ञान विभाग द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला
23. 14 सितम्बर – हिन्दी दिवस : व्याख्यान
24. 25 सितम्बर – संगोष्ठी – गोरखनाथ मंदिर
25. 2 अक्टूबर – ध्वजारोहण/पुरातन छात्र परिषद्/अभिभावक सम्मेलन
26. 5 अक्टूबर – भौतिकी विभाग द्वारा विज्ञान प्रदर्शिनी
27. 10 अक्टूबर – समाजशास्त्र विभाग की कार्यशाला, अर्थशास्त्र विभाग की कार्यशाला
28. 10 अक्टूबर – योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्मृति व्याख्यान
29. 19 अक्टूबर – चीन आक्रमण की पूर्व संध्या पर रक्षा अध्ययन विभाग द्वारा व्याख्यान
30. 27 अक्टूबर – महर्षि बाल्मिकी जयन्ती पर सभी विभागों का अधिकृत गांव में एक दिवसीय शिविर
31. 30 अक्टूबर – प्राणि विज्ञान विभागीय व्याख्यान–प्रो. डी.के. सिंह, प्राणि विज्ञान विभाग,दीदउ गोविवि
    भूगोल विभाग का व्याख्यान
32. 03 नवम्बर – भूगोल विभाग की कार्यशाला
33. 04 नवम्बर – अंग्रेजी विभाग में अतिथि व्याख्यान
34. 06 नवम्बर – रसायनशास्त्र विभाग का व्याख्यान
35. 07 नवम्बर – प्राणि विज्ञान विभाग द्वारा शोध व्याख्यान प्रतियोगिता
36. 19–26 नवम्बर – संस्थापक सप्ताह समारोह
37. 26 नवम्बर – राजनीतिशास्त्र विभाग द्वारा व्याख्यान

शैक्षिक-तिथि पत्र

38.	4–10 दिसम्बर	–	महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् संस्थापक सप्ताह समारोह
39.	06 दिसम्बर	–	बाबा भीमराव अम्बेडकर स्मृति व्याख्यान हिन्दी विभाग द्वारा
40.	16 दिसम्बर	–	विजय दिवस पर रक्षा अध्ययन विभाग द्वारा व्याख्यान
41.	15–16 दिसम्बर	–	विभागसह शोध व्याख्यान प्रतियोगिता (कला संकाय)
42.	17–18 दिसम्बर	–	विभागासह शोध व्याख्यान प्रतियोगिता (वाणिज्य एवं कला संकाय)
43.	22 दिसम्बर	–	गणित महोत्सव
44.	04 जनवरी	–	रसायनशास्त्र विभाग का व्याख्यान
45.	08 जनवरी	–	लाला लाजपत राय स्मृति व्याख्यान–इतिहास विभाग द्वारा
46.	10 जनवरी	–	गणित विभाग द्वारा कार्यशाला
47.	12 से 26 जनवरी	–	भारत–भारती पखवारा : क्रीड़ा प्रतियोगिता
48.	30 जनवरी	–	पाठ्यक्रम पूर्ण
49.	31 जनवरी	–	सभी विभागों का अधिकृत गांव में एक दिवसीय शिविर
50.	4–13 फरवरी	–	विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा
51.	14–15 फरवरी	–	राष्ट्रीय संगोष्ठी 1. कला एवं वाणिज्य संकाय द्वारा 2. रसायन विभाग विभाग द्वारा
52.	17–24 फरवरी	–	उपचारात्मक कक्षाएं
53.	माघ पूर्णिमा	–	संस्कृत विभाग द्वारा व्याख्यान
54.	25 फरवरी	–	समावर्तन समारोह

व्याख्यान सारांश एवं प्रोजक्टरयुक्त कक्षाध्यापन

प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थी शिक्षकों से सारांश प्राप्त करते हैं जो उनके अध्ययन हेतु एक आधार पत्र होता है। प्रोजक्टर के माध्यम से अध्ययन सामग्री बोधगम्य और सुरुचिपूर्ण बनायी जाती है।

प्रत्येक शिक्षक प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम दस व्याख्यान प्रोजेक्टर पर पढ़ाता है। कुछ विभागों द्वारा अब अधिकांश व्याख्यान प्रोजेक्टर की सहायता से पढ़ाये जाने लगे हैं।

विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन

विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति के माध्यम में 'वाचिक अभिव्यक्ति' को प्रभावी बनाने, उनकी चिन्तन प्रक्रिया तथा प्रश्नोत्तर के द्वारा उनकी बौद्धिक क्षमता के विकास हेतु सप्ताह में एक दिन कक्षा विद्यार्थियों द्वारा पढ़वाई जाती है।

विद्यार्थियों द्वारा प्रायोगिक कक्षाओं का संचालन

बी.एस–सी. (रसायनशास्त्र) के विद्यार्थियों की प्रतिदिन 12.30 से 2.10 तक की प्रायोगिक कक्षाएं एम.एस.सी. (रसायनशास्त्र) अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा चलाई जाती है। एम.एस–सी. के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए बी.एस–सी. के निश्चित विद्यार्थियों के नाम निर्धारित किये जाते हैं।

मासिक मूल्यांकन

महीने में एक बार विद्यार्थियों का शिक्षकों द्वारा लिखित प्रश्न–पत्र के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है। प्रत्येक माह का मूल्यांकन 35 अंक का होता है। छः माह का मूल्यांकन हेतु प्रश्न–पत्र ही मिलाकर विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा का प्रश्नपत्र होता है। यह प्रश्नपत्र विश्वविद्यालयी परीक्षा के प्रश्नपत्र की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता है।

विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा

- परीक्षा तैयारी की दृष्टि से विश्वविद्यालय परीक्षा के लगभग 15–20 दिन पूर्व विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा सम्पन्न करायी जाती है।
- शिक्षक 30 सितम्बर तक प्रश्नपत्र तैयार कर प्रभारी को दे देते हैं।
- परीक्षा परिणाम घोषित किया जाता है तथा तद्नुसार विद्यार्थियों को उत्तर पुस्तिका दिखाकर परीक्षा तैयारी कराई जाती है।
- इस परीक्षा में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अगले सत्र की प्रवेश समिति का सदस्य मनोनीत कर दिया जाता है।
- प्रथम तीन स्थान विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाएं पुस्तकालय में अन्य विद्यार्थियों के अवलोकनार्थ रखी जाती हैं।
- प्रवेश समिति के सदस्यों को समावर्तन समारोह में प्रमाण–पत्र तथा अगले सत्र में पुस्तकालय से तीन अतिरिक्त पुस्तकें दी जाती हैं। इस प्रकार इन विद्यार्थियों को पुस्तकालय से दो पुस्तक कार्ड पर तथा तीन पुस्तक मिलाकर पाँच पुस्तकों की सुविधा प्राप्त रहती है।

विश्वविद्यालय परीक्षा एवं विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा के प्रश्नपत्र पुस्तकालय में सुरक्षित

महाविद्यालय के पुस्तकालय में प्रथम सत्र (2005–2006) से ही विश्वविद्यालय परीक्षा एवं विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा के प्रश्नपत्र व्यस्थित रूप से पुस्तकालय में **सुरक्षित एवं उपलब्ध** हैं। कोई शिक्षक–विद्यार्थी वहाँ से इनकी **छायाप्रति** प्राप्त कर सकता है।

शुक्रवार, 22 फरवरी 2013, गोरखपुर, पांच प्रदेश, 18 संस्करण, नगर संस्करण
www.livehindustan.com
हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

छात्रों को साफ-सुथरी प्रवेश प्रक्रिया की जिम्मेदारी भी सौंपी

गोरखपुर। अजय कुमार सिंह

परीक्षा में टॉप करने की खुशी। भव्य समारोह, तालियों की गड़गड़ाहट और विशिष्टजनों से मेडल पाने का गौरव। दीक्षान्त समारोहों में ऐसे दृश्य तो आपने कई बार देखे होंगे लेकिन 22 फरवरी को महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय में होने जा रहे समावर्तन समारोह की यह खासियत बिल्कुल अलग है। इस समरोह में 15 टापर ऐसे होंगे जिन्हें मेडल के साथ ही महाविद्यालय की प्रवेश समिति की सदस्यता का प्रमाण पत्र भी मिलेगा। ये टापर अगले साल इन्टरव्यू पैनल में होंगे और तय करेंगे कि महाविद्यालय में किसे प्रवेश दिया जाए और किसे नहीं।

अभिनव प्रयोग

- महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़ का अनूठा प्रयोग
- दीक्षान्त में मेडल के साथ आज प्रवेश समिति के सदस्य बनने का प्रमाण पत्र भी पाएंगे 15 टॉपर

इसी महाविद्यालय ने अपने पहले दीक्षान्त समारोह (2008) में गाउन-टोपी की बजाए धोती-कुर्ता में मेडल लेते टापरों का दृश्य दिखा कर सबको चौंका दिया था। छात्रों को महाविद्यालय प्रशासन में बराबरी का दर्जा देने की अब यह नई मिसाल पेश करने का फैसला किया है।

> इससे छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ेगा, व्यक्तित्व निखरेगा और महाविद्यालय को प्रशासन में उनकी सहभागिता मिलेगी।
>
> **डॉ.प्रदीप राव,** प्राचार्य, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़

महाविद्यालय के छात्र कमलेश के शब्दों में, 'महाविद्यालय के नियंता मण्डल में भी छात्र हैं। छात्रसंघ को शक की नज़र से देखने वालों को यहां आकर देखना चाहिए कि कैसे छात्रसंघ पठन-पाठन और व्यवस्था के संचालन में सहयोगी बन सकता है।'

इन टॉपरों को मिलेगी प्रवेश समिति में जगह

बीएससी प्रथम वर्ष- धीरज कुमार, मणिभूषण, संदीप कुमार मौर्य
बीकॉम प्रथम वर्ष- उमा सिंह, भीम मौर्य
बीए प्रथम वर्ष- ममता चौहान, प्रीति शर्मा और कमलेश
बीएससी द्वितीय वर्ष- दुर्गेश सिंह
बीकॉम द्वितीय वर्ष- प्रमोद कुमार
बीए द्वितीय वर्ष–ज्योति
बीकॉम तृतीय वर्ष- जयहिन्द, हरिद्वार प्रजापति
बीए तृतीय वर्ष- अमित कुमार पाण्डेय, प्रतिमा पाण्डेय

महाविद्यालय की प्रवेश समिति में प्राचार्य सहित 15 वरिष्ठ शिक्षक होते हैं। समिति में इतने ही (15) छात्र भी होंगे। समिति की सदस्यता पाने वाले ये टॉपर 4 से 20 फरवरी तक चली महाविद्यालय की पूर्व विश्वविद्यालयी परीक्षा के हैं। प्राचार्य डॉ.प्रदीप राव के मुताबिक टॉपर तय करने की महाविद्यालय की प्रक्रिया सख्त और पारदर्शी है। यहां टापर का मतलब सबसे अधिक अंक पाना ही नहीं बल्कि छात्र को न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक पाना जरूरी है।

एक और मिसाल

महाविद्यालय ने परीक्षा खत्म होने के अगले ही दिन परिणाम घोषित करने की मिसाल पेश की है। 1600 छात्रों के लिए 4 से 20 फरवरी तक आयोजित की गई पूर्व विवि परीक्षा का परिणाम 21 फरवरी को घोषित किया गया। डॉ.राव ने बताया कि यह इसलिए सम्भव हो सका क्योंकि हर परीक्षा के बाद दो दिन के अन्दर उसकी उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन कर लिया गया।

क्रीड़ा

महाविद्यालय में छात्र/छात्राओं के समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए खेल–कूद, व्यायाम, योग की समुचित व्यवस्था है। यद्यपि कि पूरे सत्र खेलकूद व्यायाम एवं योग होते रहते हैं तथापि **नवम्बर माह** में महाविद्यालय के **संस्थापक समारोह, दिसम्बर** में **महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्** के **संस्थापक समारोह** एवं जनवरी में स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (12 जनवरी) से लेकर गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी) तक **भारत–भारती** पखवारा के अन्तर्गत महाविद्यालयी एवं अन्तर्महाविद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताएं सम्पन्न होती हैं।

भारत-भारती पखवारा

12 से 26 जनवरी

महाविद्यालय में स्वामी विवेकानन्द जयन्ती से गणतन्त्र दिवस तक भारत–भारती पखवारा का आयोजन किया जाता है। इस पखवारे में स्वामी विवेकानन्द, महाराणा प्रताप, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की स्मृतियों को केन्द्र में रखते हुए विविध आयोजन यथा खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, श्रमानुभव शिविर सम्पन्न किये जाते हैं। अब यह कार्यक्रम स्थायी परम्परा के रूप में स्थापित हो चुका है।